अध्याय पहला

प्रास्ताविक

१.१ विषय प्रवेश।

१.२ शोध कार्य की आवश्यकता।

१.३ शोध कार्य समस्या विधान।

१.४ समस्या विधान में प्रयुक्त पदों की परिभाषाएँ।

१.५ शोध कार्य का महत्व।

१.६ शोध कार्य के उद्देश्य।

१.७ शोध कार्य की परिकल्पनाएँ।

१.८ शोध कार्य की मर्यादाएँ।

१.९ अध्याय योजना।

अध्याय पहला

प्रास्ताविक

१.१ विषय प्रवेश -

वर्तमान शिक्षा पध्दति में पाठयपुस्तक का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का कोई भी ऐसा स्तर नहीं जहाँ पाठयपुस्तक का प्रचलन न हो। कोई भी विषय ऐसा नहीं जिस में पाठयपुस्तक की आवश्यकता अनुभव न की जाती है। अध्यापक की ओर से दिया गया ज्ञान कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, परंतु उसकी पूर्णता के लिए पाठयपुस्तक का सहारा अवश्य लिया जाता है।

आज के विज्ञान युग में संगणक और उपग्रहों के माध्यम से दुनिया की किसी भी स्थल की जानकारी बिलकुल कम समय में प्राप्त हो जाती है फिर भी कक्षा अध्यापन अध्ययन में पाठयपुस्तक का अपना अलग ही महत्व है। शिक्षा क्षेत्र से पाठयपुस्तक अलग करना असंभव है। कार्टर व्ही. गुड के अनुसार-

> `A book dealing with a definite subject to studies systematically arranged, intended for use at a specified level of instruction and used as a principal source of study material for a given course.'[१]

अर्थात 'पाठयक्रम के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर उपयोग में लाने से निश्चित अध्येय विषयपर व्यवस्थित अनुक्रम से लिखी हुई पुस्तक पाठयपुस्तक है।' पाठयपुस्तक का महत्व और स्वरूप स्पष्ट करते हुए रा. सो. सराफ लिखते है[२]-

> 'पाठयपुस्तक यह अध्ययन अध्यापन में एक महत्वपूर्ण साधन है। वर्गाध्यापन प्रक्रिया का एक आधार है। क्या पढाया जाय इस का दिग्दर्शन पाठयपुस्तक करता है और एक अध्यापन साहित्य इस अर्थसे अध्यापक की उपलब्धी है। सामान्य अध्यापक के लिए वह एक महत्वपूर्ण आधार होता है और वह अध्ययन प्रक्रिया में छात्रों को मदद करता है।'[२]

पाठयपुस्तक आधुनिक शिक्षाप्रणाली का महत्वपूर्ण साधन है। न केवल छात्रों के लिए ही अपितु अध्यापकों के लिए भी पाठयपुस्तकों का विशेष महत्व है। विविध विषयों का ज्ञान छात्रों को देने के लिए जो पाठयक्रम निर्धारित किया जाता है उसे कार्यान्वित करने के लिए पाठयपुस्तक एक प्रमुख साधन है। पाठयपुस्तक की महत्ता ब.बि. पंडित इन्हों ने निम्न मुद्दों से स्पष्ट की है -

१. पाठयपुस्तक से ज्ञानोपार्जन में सहायता मिलती है।
२. इस के प्रयोग से पाठकों को पढने और पढाने में सहायता मिलती है।
३. पठित पाठ को पुन:स्मरण करने-कराने में ये सबल साधन है।
४. छात्रों को गृहकार्य देने में इससे सुविधा होती है।
५. संपूर्ण कक्षा को एक साथ पढ़ने में पुस्तकें बडी उपयोगी होती हैं। इनकी सहायता से एक अध्यापक अनेक छात्रों को एक साथ सरलता से पढा सकता है।
६. पाठयपुस्तकें भाषा का विशुध्द आदर्श छात्रों के सामने रखकर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती हैं। इनकी सहायता से छात्र के विविध अंगों का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकते है।
७. छात्रों के लिए भी पाठयपुस्तकें स्वविनियुक्त (Self appropriate) अध्ययन अधिगम का प्रमुख साधन है।

भाषा विषय में पाठयपुस्तक की आवश्यकता अन्य विषयों से ज्यादा होती है। पाठयपुस्तक के जरिए अध्यापक और विद्यार्थी इन दोनों में विचारों का आदान प्रदान होता है। कोई भी अच्छा पाठयपुस्तक आशय, नियोजन संघटन, सिध्दता, निर्माण व मार्गदर्शक आदि विशेषताओं से परिपूर्ण रहता है। अच्छे पाठयपुस्तक का प्रभाव समाज के बौद्धिक उन्नतीपर आधारित होता है।

महाराष्ट्र में पाठयपुस्तक मंडल का निर्माण २७ जनवरी, १९६७ को हुआ। १ ली से ७ वी कक्षा के पाठयपुस्तकों का निर्माण यही मंडल करता है। पाठयपुस्तक निर्माण के विविध चरण आगे दिए है -

१.२ शोध कार्य की आवश्यकता -

पाठयपुस्तक यह अध्ययन-अध्यापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठयपुस्तक के बिना यह कार्य अधूरा रह जाता है। पाठयपुस्तक की अनिवार्यता ध्यान में लेते हुए वह उतनाही गुणवत्तापूर्ण होना जरूरी होता है। प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा सातवी कक्षा का हिंदी सुलभभारती यह पाठयपुस्तक पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के निकषों पर कहाँ तक सफल रहा है, यह देखा गया है। पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के पाठयपुस्तक का बाह्यांग, मुद्रित अनुस्थापन की पहचान, सामान्य उद्दिपक, गणितीय क्रिया, वाचक के लक्षण, वाचन फल इ. अंगों द्वारा पाठयपुस्तक का परीक्षण किया गया है। इन अंगों से परीक्षण करने से पाठयपुस्तक कैसा है और कैसा होना चाहिए इस बात का पता चलेगा। पाठयपुस्तक निर्मिती और अनुसंधान मंडल के तज्ञ, अध्यापक, विद्यार्थी इस के सही रूप से परिचित होंगे।

पाठयपुस्तक का आशय पृथःकरण उस के अनुसार अध्ययन-अध्यापन कैसे करे? पाठयपुस्तक में अन्तर्निवेश किए प्रश्न, संलग्न प्रश्न तथा उदाहरण आदि का उचित और परिणामकारक प्रयोग कैसे करे? पाठयपुस्तक का वाचन फल क्या होता है? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर यह परीक्षण देगा और पाठयपुस्तक में गुणात्मक वृध्दि लाने के लिए बुनियादी तौर पर मदद करेगा।

१.३ समस्या विधान -

प्रस्तुत समस्या विधान निम्नानुसार है -

'सातवी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण'।

१.४ पदों की परिभाषाएँ -

अनुसंधान यह एक वैज्ञानिक कार्य है। अत: किसी भी विषयक का वैज्ञानिक अध्ययन करते समय पदों का प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ से होता है। अनुसंधान का विषय अधिक स्पष्ट होने के लिए समस्या विधान में प्रयुक्त महत्वपूर्ण पदों की परिभाषा करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत समस्या विधान में प्रयुक्त पदों की परिभाषाएँ निम्नानुसार है -

सातवी कक्षा - महाराष्ट्र राज्य के मराठी माध्यमवाली पाठशालाओं में पढनेवाले १२ + वर्ष की आयु के विद्यार्थी।

पाठयपुस्तक - पाठयपुस्तक की परिभाषा निम्नानुसार है -

'Basic book used in a particular course of study.'[४]

अर्थात् 'विशिष्ट अभ्यासक्रम के लिए निर्धारित मूलभूत पुस्तक।' त्रिभाषा सूत्र के अनुसार अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी का अध्ययन द्वितीय भाषा के रूप में होता है। हिंदी भाषा के पाठयपुस्तक का विचार करते समय यहाँ द्वितीय भाषा के रूप में महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती और अभ्यासक्रम संशोधन मंडल द्वारा कक्षा ७ वी के लिए निर्धारित 'हिंदी सुलभभारती' यह पाठयपुस्तक।

पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान -

थॉमस और कोबासाई इन्हों ने पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के छ: तत्व बताए है[५] -

१. पाठयपुस्तक का बाह्यांग।
२. मुद्रित अनुस्थापन।
३. सामान्य चेतक।
४. गणितीय क्रिया।
५. वाचक के लक्षण।
६. वाचन फल।[५]

उपर्युक्त छः तत्वों के आधार पर पाठयपुस्तक का परीक्षण करने के लिए इस पद का प्रयोग किया है।

परीक्षण -

पाठयपुस्तक को पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सिध्दान्तों के अनुसार परखना।

१.५ शोध कार्य का महत्व -

हिंदी इस देश की राष्ट्रभाषा है। महाराष्ट्र में यह भाषा द्वितीय भाषा के रूप में पढाई जाती है। इ.स. १९६० में महाराष्ट्र राज्य का निर्माण हुआ। गत ३८ वर्ष में छात्रों के श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन इस क्षेत्र में उतना विकास नहीं हुआ जितना होना चाहिए था। इस का कारण यह बताया जा सकता है कि या तो अध्यापन कार्य ठिक तरह से ना हो या पाठयपुस्तक का दर्जा समाधानकारक/ योग्य ना हो इसलिए इस क्षेत्र में शोध कार्य होना अनिवार्य है।

हिंदी भाषा के पाठयपुस्तक हिंदी के विकास में एक बुनियादी तौर पर काम करते है। किसी भी भाषा के प्रभाव में आने का पहला साधन पाठयपुस्तक होता है। संबंधित भाषा के साहित्य क्षेत्र में कदम रखने के लिए पहला माध्यम पाठयपुस्तक है। पाठयपुस्तक से छात्रों के मन पर होनेवाला प्रभाव स्थायी होता है। इसलिए पाठयपुस्तक का अंतरंग और बाह्यांग गुणवत्तापूर्ण होना आवश्यक है। हिंदी पाठयपुस्तक का पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण अभी तक नहीं हुआ है। इसलिए यह शोध कार्य उपयुक्त सिध्द होनेवाला है। इस खोज कार्य में कक्षा ७ वी के हिंदी पाठयपुस्तक का पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार परीक्षण करकर निष्कर्ष निकाले गए हैं। हिंदी भाषा का अध्ययन अध्यापन करनेवालों को निश्चित ही यह उपादेय है।

शिक्षा अर्थात छात्र में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक विकसन है। इन उद्देश्यों को मद्दे नजर रखते हुए पाठयपुस्तक का निर्माण होता है। पाठयक्रम पुरा करने का वह एक प्रभावी साधन होता है।

'शास्त्रशुध्द रीति से तैयार किए हुए और निर्दोष पाठयपुस्तक के प्रयोग से अध्ययन अध्यापन में सुसूत्रता रहती है और पढाई के लिए एक निश्चित राह मिलती है।'[६]

प्रस्तुत शोध कार्य में पाठयपुस्तक का वस्तुनिष्ठ पध्दति से अवलोकन किया गया है। इसलिए यह शोध कार्य महत्वपूर्ण है।

गुणवत्तापूर्ण और दर्जेदार पाठयपुस्तक अध्ययन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण साधन है। इसलिए वह निर्धारित अभ्यासक्रमानुसार होना चाहिए। जिस कक्षा के लिए पाठयपुस्तक नियुक्त किया गया हो उस कक्षा के छात्रों के उम्र के अनुसार मानसिक, भावनिक, शारीरिक पक्वता इन बातों का ध्यान रखते हुए पाठयपुस्तक में भाषा का होना अनिवार्य है। पाठयपुस्तक में सभी संकल्पनाओं का स्पष्ट उल्लेख, उचित विवरण, अभ्यास विषय से संबंधित तर्कशुध्द एवं सुसंबंध रचना इन बातों का पाठयपुस्तक में होना अनिवार्य है।

विषयों का निर्दोष प्रस्तुतीकरण उचित भाषा, अभिव्यक्ति, चित्र, आकृतियाँ, स्वाध्याय, सारांश आदि बातें किसी भी पाठयपुस्तक के लिए अनिवार्य अंग है। प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा कक्षा ७ वी के हिंदी पाठयपुस्तक का इस दृष्टि से परीक्षण किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में कक्षा ७ वी के हिंदी पाठयपुस्तक का परीक्षण करते समय हिंदी अध्यापन करनेवाले अध्यापक तथा अध्ययन करनेवाले छात्र आदि के विचारों का ध्यान रखा है। अध्ययनार्थी तथा अध्यापकों को महसूस होनेवाली समस्याएँ, पाठयपुस्तक में रही कमियाँ, तथा पाठयपुस्तक के बारे में सूझाव, आदि बातों का विचार प्रस्तुत शोध कार्य में किया गया है तथा इस शोध कार्य का आधार वास्तविक होने के कारण इसे अनन्यसाधारण महत्व मिलेगा यह आशा है।

१.६ **शोध कार्य के उद्देश्य -**

इस परीक्षण के उद्देश्य निम्नानुसार है -

१. ७ वी कक्षा के लिए निर्धारित हिंदी पाठयपुस्तक 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के बाहयांग का (Physical aspects) परीक्षण करना।

२. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के मुद्रित अनुस्थापन का (Print orientation) परीक्षण करना।

३. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के सामान्य उद्दीपक का (Nominal stimulus) परीक्षण करना।

४. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के गणितीय क्रिया (Mathemagenic behaviour) का परीक्षण करना।

५. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के वाचक के लक्षणों का (Readers characteristics) परीक्षण करना।

६. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' के वाचन फल का (Outcomes of reading) जाँच कार्य करना।

७. 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' का पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के सिध्दान्तों के आधार पर मूल्यांकन करना।

१.७ **परिकल्पना** - (Hypothesis)

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्यों के अनुसार यह शोध कार्य सर्वेक्षण पध्दति अपना कर किया जाएगा। इस शोध कार्य की परिकल्पनाएँ निम्नानुसार है -

१. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का बाहयांग पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए बाहयांग के निकषों के अनुसार है।

२. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का मुद्रित अनुस्थापन पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए मुद्रित अनुस्थापन के निकषों के अनुसार है।

३. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का सामान्य उद्दिपक पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए सामान्य उद्दिपक के निकषों के अनुसार है।

४. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक में गणितीय क्रिया पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए गणितीय क्रियाओं के निकषों के अनुसार है।

५. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक के बारे में वाचक के लक्षण पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए वाचक के लक्षणों के निकषानुसार है।

६. ७ वी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का वाचन फल पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के अनुसार तय किए वाचन फल के निकषों के अनुसार है।

१.८ शोध कार्य की मर्यादाएँ -

१. प्रस्तुत शोध कार्य कोल्हापूर महानगरपालिका के क्षेत्र तक ही सीमित है। इस शोध कार्य में कोल्हापूर महानगरपालिका के क्षेत्र में मराठी माध्यमवाली कुल ७५ पाठशालाएँ हैं। जिन में से २३ पाठशालाओं में कक्षा ७ वी है। इन पाठशालाओं में से २२ प्रतिशत पाठशालाएँ शोध कार्य के लिए चुनी गई है। वह पाठशालाएँ निम्नानुसार है -

१. श्री साई हायस्कूल, कोल्हापूर।
२. इंदुमतीदेवी गर्ल्स हायस्कूल, कोल्हापूर।
३. श्रीराम हायस्कूल, कोल्हापूर।
४. वि.स. खांडेकर प्रशाला, कोल्हापूर।
५. वालावलकर प्रशाला, कोल्हापूर।

२. इस परीक्षण में केवल महाराष्ट्र राज्य पाठयपुस्तक निर्मिती पाठयचर्या संशोधन मंडल द्वारा निर्धारित हिंदी पाठयपुस्तक 'हिंदी सुलभभारती सातवी कक्षा' का परीक्षण है। इस में किसी भी अन्य कक्षा या अन्य पुस्तक का समावेश नहीं।

३. यह परीक्षण कोल्हापूर शहर की केवल जहाँ हिंदी भाषा द्वितीय भाषा के रूप में पढाई जाती है, ऐसी पाठशालाओं के सातवी कक्षा के हिंदी पाठयपुस्तक का परीक्षण है।

४. यह परीक्षण पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान के केवल पाठयपुस्तक बाह्यांग, मुद्रित अनुस्थापन, गणितीय क्रिया, सामान्य उद्दिपक, वाचक के लक्षण, वाचन फल, इ. अंगों का विचार करता है।

१.९ **अध्याय योजना -**

अनुसंधान के लिए पध्दति, साधनों द्वारा संकलित जानकारी, उसका वर्गीकरण, विश्लेषण, निष्कर्ष तथा सूझाव इनका प्रस्तुतीकरण निम्न अध्यायों में किया है।

अध्याय-१ **प्रास्ताविक -**

इस अध्याय में यह समस्या कैसे निर्माण हुई यह छानबिन कर उस समस्या का शब्दांकन किया गया है। समस्या का महत्व, आवश्यकता, उद्देश्य, मर्यादाएँ और किस पध्दति का प्रयोग किया गया है इस का निर्देश किया गया है।

अध्याय- २ **पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान -**

पाठयपुस्तक तंत्रज्ञान का अर्थ, उस के सिध्दान्त, स्वरूप आदि से संबंधित तात्विक जानकारी इस अध्याय में सम्मिलित की है।

अध्याय-३ **संशोधन समस्यासे संबंधित साहित्य का समालोचन -**

संशोधन विषय के संदर्भ में इसी संदर्भ में पहले किए गए शोधकार्य का विचार इस अध्याय में किया गया है। प्रस्तुत अध्यायमें समालोचन की उपयुक्तता तथा मर्यादाओं का

समावेश किया गया है। इस शोध कार्य से पूर्व हुआ शोध कार्य और प्रस्तुत शोध कार्य में अंतर एवं उस का महत्व विशद किया है।

अध्याय ४ - **शोध कार्य पद्धति** -

अध्ययन विषय का अभिकल्प, प्रयुक्त पद्धति का वर्णन, शोध कार्य सामग्री स्वरूप, शोध कार्य के लिए प्रयुक्त साधन, जनसंख्या और न्यादर्शचयन, सामग्री विश्लेषण और अर्थान्वेषन इ. बातों की जानकारी अध्याय में दी गई है।

अध्याय ५ - **संशोधन सामग्री विश्लेषण और अर्थनिर्वचन** -

प्रस्तुत अध्याय में प्रश्नावली के द्वारा संकलित हुई जानकारी का वर्गीकरण और विश्लेषण करकर उसका अन्वयार्थ लगाया गया है।

अध्याय ६ - **निष्कर्ष एवं सूझाव** -

संशोधन सामग्री के आधार पर समस्या की वर्तमान स्थिती क्या है यह निश्चित की गई है। उसी के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए है। निष्कर्ष के आधार पर सूझाव दिए गये है। साथ ही संशोधन विषय के संदर्भ में और संशोधन हो इस के लिए उपयुक्त समस्या की ओर भी निर्देश किया गया है।

अध्याय पहला

संदर्भ सूची

१. Good C.V., Dictionary of Education, Mac Graw Hill Book Co. 1945, P.423

२. देशपांडे वि.भा., तावरे स्नेहल, (संपा.) मराठी भाषा आणि साहित्य, पुणे : मेहता पब्लिकेशन हाउस, प्रथमावृत्ती, १९९०, लेख, सराफ रा.सो., महाराष्ट्रातील शालेय स्तरावरील पाठयपुस्तके पृष्ठ ११४-११५ अनुवाद.

३. पंडित बा.बि., हिंदी अध्यापन, पुणे : नूतन प्रकाशन, प्रथमावृत्ती, १९९०, पृष्ठ १३२

४. G.Terr Page, and Thomas J.B., with Marshall A.R., International Dictionary of Education, London : The English Language Book Society and Kogan Page, 1979.

५. Thomas R.M. and Kobayashi V.N., Educational Technology It's Creation- Development and Cross Cultural Transfer Volume 4,New York : Pergaman Press, 1987, Page 191-92.

६. अकोलकर ग.वि., पाटणकर ना.वि., मराठीचे अध्यापन, पुणे : व्हीनस प्रकाशन, सातवी आवृत्ती, १९७०, पृष्ठ ९६.